Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: https://www.svajrs.com/
ISSN: 2584-105X

समकालीन हिन्दी लेखन में उदय प्रकाश की प्रासंगिकता

कामिनी
शोध छात्रा- हिंदी विभाग, एम०एम०एच० कालेज गाजियाबाद

Abstract

वर्तमान के आधुनिक युग में काव्य क्षेत्र में कई सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। मुनय प्रकाश जी ,क प्रमुख कवि, कथाकार, और आलोचक हैं, जिन्होंने अपने लेखन में समाज की समस्याओं, शो"ाण, और संघ"र्ा को प्रमुखता से उठाया है। उनके काव्य संग्रह "सुनो कारीगर" और "द्वार" में आम जनता की पीड़ा और उनके अधिकारों की वकालत की गई है। उन्होंने अपनी कविताओं और कहानियों में दलित, आदिवासी, और वंचित वर्गों की आवाज को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया है। मुनय जी का लेखन समाज की वास्तविकताओं का सामना करते हु, उसे साहित्य में प्रकट करता है, और उनके निबंध और आलोचना साहित्य जगत में गहराई और विविधता लाते हैं। उनका साहित्य युग–प्रासंगिक और समाजिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम है।

वर्तमान के आधुनिक युग में काव्य के क्षेत्र में कई सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। श्री मुनय प्रकाश जी मुख्य रूप से एक कवि हैं, साथ ही कथाकार, नाटककार, चित्रकार, आलोचक, शिक्षक, प्रशासनिक समीक्षक की भी भूमिका निभाते हैं। उनके लेखन काल में कई उतार-चढ़ाव और संघर्षपूर्ण स्थितियां रहीं। सभी साहित्यकार मानते हैं कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी साहित्य कई आंदोलनों से प्रभावित हुआ और काफी समय तक साहित्य की दिशा भी अस्पष्ट थी। आज़ादी के बाद आम जनता ने अपनी आत्म-प्रकाशना पाई थी। दुनिया में विश्वयुद्धों का दौर चल रहा था। बीसवीं सदी का अंत साहित्य में प्रयोगों का समय था। नए-नए विषयों को साहित्यकार आम जनता की अभिव्यक्ति का रूप दे रहे थे, जिनमें त्रासदी, संघर्ष, ऐतिहासिकता, आधुनिकता, सामाजिक और धार्मिक बदलाव शामिल थे।

मुनय जी का दूसरा काव्य संग्रह "द्वार" उनकी कविता की अभिव्यक्ति की व्यापकता को नए सिरे से प्रस्तुत करता है। उनकी कविताओं में आम जनता की पीड़ा और समस्याओं को उठाया गया है। मुनय जी ने अपने अनुभवों को कविता में प्रकट किया। उनकी रचनाओं का परिचय काव्य संग्रह "सुनो कारीगर" (1980द्ध से मिलता है और इस संग्रह में उन्होंने अस्तित्व और उसके विरोध को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है। वे हमेशा अपने वर्ग के साथ खड़े रहते हैं। वर्तमान समय के बाद वे व्यवस्था के संघर्षों को उजागर करते हैं साथ ही कठिन परिस्थितियों में वंचित वर्ग के साथ खड़े रहते हैं। वे जनता को अधिकार के रूप में समाज का हिस्सा मानते हैं और सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं चाहते।

उनकी कई कविताओं में जातिवाद, दलित समाज से जुडे उनके ऊपर हो रहे शोषण के अनेक मुद्दों को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने "सुनो कारीगर" की "मरना" कविता में लिखा है:–

> ''कुछ नही सोचते
> और कुछ नहीं बोलते पर आदमी मर जाता है।''[2]

मुनय प्रकाश जी दुष्यंत कुमार की तरह अपने समय या युग की बुराइयों पर गहरी चोट करते हैं। वे गरीब, वंचित और असहाय के समर्थक हैं। समाज में संपत्ति, व्यवस्था के व्यापक विरोधी हैं। राजनीति भी अब पूंजीपतियों के हाथ की कठपुतली बन गई है। राज्य व्यवस्था, जनता के अधिकारों के बजाय शोषण ही देती है। सरकार और शासन की तुच्छता को स्पष्ट किया है:–

> ''तमाम किताबों
>
> और संविधान और भाशाओं के बाद
>
> अन्तः राज्यसत्ता
>
> सीसे की ढली हुई

दो ओंस की गोली है।"[3]

उनकी कविताएं आम जनता पर हो रहे अत्याचार, पीड़ा और दर्द की विरोधी हैं। गरीब और वंचित निम्न वर्ग से हर कदम पर लड़ते हैं। वे पूर्ण व्यवस्था पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए पूछते हैं:–

"जी हारा है हर बार उसे मारा क्यों जा रहा है बार बार
अपने आप से डरता हुआ पूछता हुआ लगातार
क्यों सिर्फ गरीब या क्यों सिर्फ अमीर नहीं है सारा संसार
जिसके पास हैं सबसे ज्यादा विचार, क्यों वही पाया जाता है
सबसे अधिक लाचार"[4]

मुनय प्रकाश जी कहानी क्षेत्र में भी अपनी छाप छोड़ते हैं। महात्मा गांधी, विभाजन, त्रासदियां, शरणार्थियों की प्रार्थना, प्रार्थना पॉल, गोंडवाना का स्काउट, वारेन हेस्टिंग्स का साँप, हेम्स फिजी, पहेली, नाक में सुई, भाई का बलिदान, नंदा पर्वत: कथा नायक आदि कहानियां शोषण, न्याय और संघर्ष को उजागर करती हैं। "टेपू कहानी में लेखक ने टेपू के माध्यम से आम जनता की स्थिति को दिखाया। टेपू भूखा-प्यासा अपनी सारी समस्याओं से लड़ता हुआ" जीवित रहता है।

समाज में पूंजी का विरोध भी है जो लगातार निर्देशित जनता को फंसता रहता है। यह पूंजीवाद का विरोध, बाजार और उपभोग का तंत्र फैला रहा है जिस कारण पूरी व्यवस्था को अस्थिर कर रहा है। "आचार्य की लड़ाई" कहानी शैक्षिक संस्थाओं में व्यवस्थाओं को उजागर करती है। "दिल्ली की दीवार" कहानी का लेखन का विरोध करती है। "और प्रार्थना में" स्वास्थ्य के क्षेत्र में भ्रष्टाचार को उजागर करती है।

उनके लेखन का संसार निम्न-मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवी ही प्रमुख हैं और वे स्वयं को भी मध्यवर्गीय मानते हैं। पूंजीवाद के प्रभाव में धर्म, साहित्य, मूल्य, विश्वास, परिवार, रिश्ते, संस्कृति, लेखक पुस्तक, विचार आदि के अर्थ बदल गए हैं। बाजारवाद में पूंजी ने नए रूप दिए हैं। लेखक का कहना है बाजार अब सभी चीजों का विकल्प बन चुका है जो कि विज्ञान, धर्म, कला और अन्य मान्यताओं पर आधारित है।

दलित, महिला, आदिवासी और अल्पसंख्यकों से शिक्षित वर्ग की पहचान और अस्तित्व की लड़ाई लड़ने में वे हमेशा तत्पर रहे हैं जिस कारण कहानियों में हिंसा, अन्याय, क्रूरता, शोषण को कई रूपों में स्पष्ट किया है। पुरुष-महिला भेदभाव का महान विचारक युग आ गया है।

महिला जो अब बाजार की रानी बन चुकी है, और पूरा बाजार और संपूर्ण उद्योग उसी के कंधों पर खड़ा है। उनकी कहानियां समय की वास्तविकताओं के साथ व्यक्त हुई हैं जिनकी विषय-वस्तु में शोषण, राजनीति का नकाब, सामाजिकता, जातिवाद, धर्म का बाजारवाद, उपभोक्तावाद, उत्तर आधुनिकता, संस्कृति में परिवर्तन, बंदिशें, कालाधन का सत्य, भाषा पर वर्ग विशेष का प्रभाव, पर्यावरण विचार, आदिवासी जीवन और उनकी मानसिकता, नव-उदारीकरण की प्रक्रिया, नेता पुलिस और अपराधियों का गठजोड़, वैश्वीकरण आदि पर खुलकर विचार किया गया है।

लेखक ने अपने समय की संवेदनशीलता, मृत्युभाव, पीड़ाभाव, दरिद्रता, संघर्ष उन्मुखता, यथास्थितिवाद, आधुनिकता, व्याभिचार, नारी-शोषण, हिंदी के अस्तित्व और महत्व पर विचार किया है जिस कारण हम नई गुलामी को पहचान नहीं पा रहे हैं। नव उदारीकरण ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार, साहित्य, संस्कृति, तकनीकी और उत्पादनों का प्रसार शुरू किया है। यह नव-उदारीकरण केवल आर्थिक रूप में ही नहीं बल्कि भाषा, संस्कृति और विचारों के क्षेत्र में भी मौजूद है।

धर्म और राजनीति ने प्रतिक्रियावाद और तात्कालिक नीतियों का सहारा लिया है जिससे सामाजिकता, हिंसा, विकृति, उत्पीड़न, धार्मिक उन्माद फैले हैं। मुनय जी बार-बार आम जनता को शोषकों, अपराधियों, गुंडों, व्यवसायियों और ग्लोबल लोचरों से सुरक्षित रहने की अपील करते हैं। उनके पाठक व्यवस्था और शासन से भिड़ जाते हैं। वे उनके सामने झुकते नहीं बल्कि उसका विरोध करते हैं। जीते-जी या मरकर वे अपना विरोध जरूर करते हैं। लेखक अपने ऊपर लगे आरोपों से विचलित भी नहीं होते बल्कि उन तर्कों का लेखन में उत्तर देते हैं।

अपने लेखन में पुरानी और जर्जर हो चुकी लेखन परंपराओं को तोड़ते हैं। लेखन में उन्हें प्रयोगों ने ही अलग पहचान दी है। वे पुरस्कार के लिए वहां दौड़ नहीं लगाते। उनके पुरस्कारों की सूची से उनके साहित्य के महत्व का पता चलता है। कुछ संस्थाओं ने स्वतंत्र रूप से उन्हें "सम्मान" किया है। हमारे आस-पास फैली हिंसा, लूट, रोजगार और अपराध से सारी दुनिया तेजी से बाजारमुखी बन चुकी है। व्यक्ति के स्थान पर संस्था है, जेल है, घर की जगह दुकान है। सब कुछ अब बाजार में है।

मुनय प्रकाश जी की कथा साहित्य में निबंध आलोचना और शोधकर्ताओं का संग्रह भी है। "ईश्वर की आंखें", "अपनी उनकी बात", नई सदी का प्रांत" पुस्तकें भी अभी विचारधारा को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त कर रही हैं। वे अच्छे कवि, कथाकार, आलोचक, अनुवादक और नाटककार होने के साथ-साथ एक अच्छे विचारक या समीक्षक भी हैं। व्यवस्था और शोषणकारी तंत्र से वे

सतर्क रहते हैं और दो-फांक शैली में उनका विरोध करते हैं। "ईश्वर की आंखें" पुस्तक में उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं में लिखे विचारों से आलेखों को संकलित किया है। निबंधों की गुणवत्ता पाठक वर्ग की चाटुकारिता और संयोजकता के अनुसार बनाई रखी है। उनके निबंधों में आधुनिकता, उत्तर आधुनिक दलित विमर्श, धर्म, महिला-विमर्श, आदि सभी उनकी दृष्टि समय और साहित्य की गहराइयों पर केंद्रित रहती है। उनका किसी से निजी विरोध नहीं है वे तो जनता को जागृत करते हैं वे राजनीति की चपेट में सत्ता को सत्यापित करने वाले साहित्यकारों की भी आलोचना करते हैं। उनके निबंध समय की प्रक्रियाओं पर विस्तृत विचार है।

"नई सदी का प्रांत" पुस्तक भी इसी दायित्व को निभाती है। सत्ता, धन, उपभोग के प्रभाव ने सभी रिश्ते-नातों, मानव संवेदनाओं को तोड़कर रख दिया है। ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा ने हमें भीतर तक जकड़ लिया है। ऐसे में मुनय जी ने श्रेष्ठ और समकालीन रचनाकारों पर व्यक्तिगत अत्यंत आत्मीय टिप्पणियां लिखी हैं जिनके माध्यम से उनके मानवतावाद को जानने-समझने की कोशिश की गई है। उन्होंने जयशंकर प्रसाद, हरिवंश राय बच्चन, प्रेमचंद, मोहन राकेश, नरेश मेहता, विजयदेव नारायण साही, नामवर, मुक्तिबोध, गिरिराज किशोर, कुमार विकल, सफ़ेद मौन, किशोरी चरण दास, कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर आदि पर लेख लिखकर उनकी कला को जाना है। शोधकर्ता की पुस्तक "अपनी उनकी बात में" मुनय जी के विमर्श साहित्य में रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, नगेंद्र, विश्वनाथ त्रिपाठी, लक्ष्मीकांत वर्मा आदि के विचारों के साथ चर्चा करते हैं। वे प्रेमचंद की "नई सदी का प्रांत", नामवर सिंह की "जश्न के बीच", हरिवंश राय बच्चन की "अपनी उनकी बात", मोहन राकेश की "संसार की धरोहर", विजयदेव नारायण साही की "नई सदी का साहित्य" जैसे विभिन्न साहित्यिक क्षेत्रों में फैलाव को देखते हुए उनके कार्य को विस्तार से वर्णित किया है।

मुनय जी एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो साहित्य क्षेत्र में अपनी "सक्रियता" के लिए जाने जाते हैं और उनके पाठक भी उसी की प्रतिध्वनि हैं। उनके साहित्य को पढ़कर ऐसा लगता है कि उनकी समय की संवेदनशीलता से साहित्य जगत को उर्जित कर दिया गया है वे उससे प्रेरित होते हैं लेकिन उनका अभिमान ऐसा नहीं है। उम्मीद की जा सकती है कि वे भविष्य में भी इन विपरीत परिस्थितियों से लड़ने का साहस अपनी रचनाओं के माध्यम से हमें देते रहेंगे और इस कार्य में मुनय जी की धर्म पत्नी दुर्गादेवी, पुत्र सिधार्थ और नातिन भी अपनी भूमिका की प्रतीति का निर्वाह करेंगे। मुनय जी ने विपरीत परिस्थितियों में परिवार को बिखरने नहीं दिया और अंततः अपने युग के संघर्ष को अपने शब्द दिए। वे युग-प्रासंगिक रचनाकार हैं उनका

साहित्य की गहराई और अपने युग संघर्ष का साक्ष्य है जिससे दलित संवेदनाओं को सभी मानकों में अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ

मुनय प्रकाश, "एक भाषा बोलती है", पृष्ठ 22

मुनय प्रकाश, "सुनो कारीगर", पृष्ठ 93

मुनय प्रकाश, "द्वार-द्वार", पृष्ठ 72

वही, "एक भाषा बोलती है", पृष्ठ 36

****